व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका
हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम, डॉ. एस. प्रीति
डॉ. एस. रजिया बेगम

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

ISBN : 978-93-92703-94-2
© लेखक
प्रथम संस्करण : 2025

प्रकाशक :

सृजनलोक प्रकाशन

बी–1, दुग्गल कॉलोनी, खानपुर, नई दिल्ली –110062

मोबाइल : 7654926060

ईमेल : srijanlok@gmail.com

आवरण चित्र : नेट से साभार

आवरण सज्जा : संतोष श्रेयांस

मुद्रक : बी.क्यू.एस. सर्विसेज, खानपुर नई दिल्ली - 62

Vyaktitva Evam Samaj Nirman me Baal Sahitya ki
Bhumik : Hindi Evam Bharatiya Bhashaon ke sandrabh me.

Editted By : Dr. Md. Shwahidul Islam, Dr. S Preeti
Dr. S Razia Begum

Published by : Srijanlok Prakashan,
B - 1, Duggal Colony, Khanpur, New Delhi – 110062

अनुक्रमणिका

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	बाल साहित्य के विकास में कनउजी लोक साहित्य का प्रदेय	5
डॉ. नरेश कुमार	हिमाचल का बाल साहित्य (21वीं सदी की हिन्दी कविता के विशेष सन्दर्भ में)	17
डॉ. एस. प्रीति	प्रिशियस बेबी एक मनोविश्लेषणात्मक चित्रण	24
डॉ. एस रजिया बेगम	व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला हैं बाल कथाएं	28
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	आधुनिक तमिल बाल साहित्य के पितामह अष. वल्लियप्पा	33
डॉ० रेखा शर्मा	बाल साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ताः भविष्य की चुनौतियाँ और संभावनाएं	39
डॉ. अनिता सिंह	कैसा हो डिजिटल युग का बाल साहित्य?	44
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	बाल साहित्य के विविध आयाम	52
डॉ. एस. विजया	बालकों के विकास में बाल साहित्य का योगदान	60
डॉ. आर. कविता	समाज और राष्ट्रीय निर्माण में बालसाहित्य का योगदान	67
रानी परिहार	दिव्या माथुर कृत बाल उपन्यास ''बिन्नी का बिल्ला'' में समाहित बाल चेतना	72
डॉ. मो. मजीद मियां	हिन्दी साहित्य में बाल कविता	77
जय कुमार	दीनदयाल शर्मा की कविताओं में बालमन का विश्लेषण	84
डॉ. ए रमणी	चरित्र और व्यक्तित्व में बाल साहित्य का योगदान	89

डॉ. सावित्री देवी	क्षमा शर्मा के कथा साहित्य में बाल विमर्श	92
डॉ. एस. प्रीति लता	हिन्दी कहानियों में बाल मनोविज्ञान और नैतिकता	98
डॉ. सुमित्रा देवी	नई शिक्षा नीति और बाल साहित्य	101
डॉ. सपना पेळपकर	समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अमृतलाल के बाल साहित्य का योगदान	107
डॉ. श्रीविद्या पीवी	कृत्रिम बुद्धि और तकनीक के वर्तमान समय में बाल साहित्य की चुनौतियां	117
डॉ. डी. जयभारती	बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति और भविष्य	121
कंचना कुमारी	व्यक्तित्व निर्माण के विविध आयाम (दिविक रमेश के बाल साहित्य के विशेष संदर्भ में)	126
विजेता पाल	बाल साहित्य में विज्ञान का महत्व	133
वेंकट शिल्पा. काकि	बाल साहित्य में परी की कहानियों की आवश्यकता और महत्व	137
डॉ. हेमलता प्रेमजीभाई लोंचा	बालको के सर्वांगीण विकास में बाल साहित्य का योगदान	143
एम. संजीवी कनी	कृत्रिम बुद्धि और तकनीक के वर्तमान समय में बाल साहित्य की चुनौतियां	152
मरगदवल्ली. बी	व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका	159
इ. जाक्कुलिन	बालसाहित्य एक अनुशीलन : मालती जोशी की कहानियों के संदर्भ में	164
आर. आर. सौम्याश्री	व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका	170
भुवनेश्वरी. एस	दिनेश चमोला 'शैलेश' की बाल कहानियों में जीवन मूल्य	173
डॉ. जी. अय्याराजु	हिंदी बाल साहित्य की भूमिका	178
पूजा रानी	उषा यादव के बाल साहित्य में जीवन मूल्य और संस्कृति	184

कृत्रिम बुद्धि और तकनीक के वर्तमान समय में बाल साहित्य की चुनौतियां

एम. संजीवी कनी
शोधार्थी, हिंदी विभाग
Vels Institute of Science Technology
and Advanced Studies (VISTAS)
पल्लावरम, चेन्नै, तमिलनाडु

शोध निर्देशिकाः डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग

शोधसारः

आज का युग कृत्रिम बुद्धिमत्ता का डिजिटल युग है। इस तकनीकी क्रांति ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है - शिक्षा से लेकर मनोरंजन तक। ऐसे में बाल साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। बच्चों का साहित्य, जिसका उद्देश्य न केवल मनोरंजन बल्कि शिक्षा और संस्कारों का विकास भी है, आज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीकी विकास के वर्तमान युग में बाल साहित्य के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। डिजिटल क्रांति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने जहां बाल साहित्य के प्रसार के नए मार्ग खोले हैं, वहीं इसने पारंपरिक बाल साहित्य के स्वरूप, उद्देश्य और प्रभाव पर गंभीर प्रश्न भी खड़े किए हैं। यह शोध आलेख प्रमुख बाल साहित्यकारों के दृष्टिकोण का अध्ययन करते हुए, इस नए परिदृश्य में बाल साहित्य के भविष्य का आकलन करता है।

बीज शब्द : कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल क्रांति, बाल मनोवैज्ञानिक, कल्पनाशक्ति, प्रभावशीलता, परंपरागत मूल्य, आलोचनात्मक सोच

प्रस्तावना

बाल साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक और शैक्षिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग होता है। यह बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंतु वर्तमान समय में, जब कृत्रिम बुद्धि और डिजिटल तकनीक हमारे जीवन के हर क्षेत्र को परिवर्तित कर रही

है, बाल साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। स्मार्टफोन, टैबलेट और डिजिटल कंटेंट की बढ़ती लोकप्रियता ने पारंपरिक पुस्तकों और कहानियों के प्रति बच्चों के आकर्षण को कम किया है। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित कंटेंट के आगमन ने बाल साहित्य के सृजन और वितरण की प्रक्रिया को भी परिवर्तित किया है। इस शोध आलेख का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजना है:

1. कृत्रिम बुद्धि और तकनीकी विकास ने बाल साहित्य के स्वरूप और विषय-वस्तु को किस प्रकार प्रभावित किया है?
2. डिजिटल युग में बच्चों की पठन आदतों में क्या परिवर्तन आए हैं?
3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित बाल साहित्य की गुणवत्ता और प्रभाव क्या है?
4. प्रमुख बाल साहित्यकारों ने इन चुनौतियों का सामना किस प्रकार किया है?
5. बाल साहित्य के भविष्य को सुरक्षित और समृद्ध बनाने के लिए क्या रणनीतियां अपनाई जा सकती हैं?

साहित्य समीक्षा

डॉ. कृष्ण कुमार और 'डिजिटल युग में बालमन'

प्रख्यात बाल मनोवैज्ञानिक और लेखक डॉ. कृष्ण कुमार ने अपनी पुस्तक ''डिजिटल युग में बालमन" (2019) में तकनीक के प्रभाव से बच्चों की पठन आदतों में आए परिवर्तनों का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनके अनुसार, ''आज के बच्चे ज्ञान के स्रोत के रूप में पुस्तकों से अधिक स्क्रीन पर निर्भर हैं। उनका ध्यान-केंद्रण समय कम हुआ है और वे त्वरित सूचना और मनोरंजन चाहते हैं।" (कुमार, 2019, पृ. 45)[1]

डॉ. कुमार के अनुसार यह परिवर्तन चिंताजनक है, क्योंकि गहन पठन से मिलने वाले कौशल और लाभ स्क्रीन पर सतही पठन से नहीं मिल सकते। उन्होंने टेक्नोलॉजी और परंपरागत पठन के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

मृदुला सिन्हा और 'बदलते परिवेश में बाल कथा'

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार मृदुला सिन्हा ने अपनी पुस्तक ''बदलते परिवेश में बाल कथा" (2020) में लिखा है कि, ''आज की बाल कथाओं को तकनीक के साथ तालमेल बिठाना होगा, लेकिन अपनी मूल आत्मा को खोए बिना। हमारे बाल साहित्य में हमारी संस्कृति, मूल्य और भाषा की समृद्धि को बनाए रखना महत्वपूर्ण है।" (सिन्हा, 2020, पृ. 78)[2]

सिन्हा के अनुसार, डिजिटल माध्यमों का उपयोग बाल साहित्य के प्रसार और लोकप्रियता के लिए किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए नए प्रारूपों और भाषा-शैली का विकास आवश्यक है।

देवेंद्र कुमार और 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में बाल साहित्य'

तकनीकी विशेषज्ञ और बाल साहित्य समीक्षक देवेंद्र कुमार ने अपने शोध आलेख ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में बाल साहित्यः चुनौतियां और अवसर" (2023) में कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित बाल साहित्य की समीक्षा की है। उनके अनुसार, "कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित कहानियां तकनीकी रूप से सक्षम हो सकती हैं, लेकिन उनमें मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक संदर्भ और सूक्ष्म भावनात्मक नुआंस अक्सर अनुपस्थित होते हैं।" (कुमार, 2023, पृ. 112)[3] देवेंद्र कुमार के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को बाल साहित्य के सृजन में सहायक भूमिका में देखा जाना चाहिए, न कि मानव रचनाकारों के विकल्प के रूप में।

तकनीकी विकास और बाल साहित्यः प्रमुख प्रभाव

1. पठन आदतों में परिवर्तन

वर्तमान डिजिटल युग में बच्चों की पठन आदतों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा 2022 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, 8–14 वर्ष के 65% बच्चे पारंपरिक पुस्तकों की तुलना में डिजिटल माध्यमों पर कहानियां पढ़ना या सुनना पसंद करते हैं। इससे गहन पठन और कल्पनाशक्ति के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

शिक्षाविद् रमेश यादव ने अपने शोध में पाया कि ''डिजिटल माध्यम पर पढ़ने वाले बच्चे अक्सर पाठ को स्किम (त्वरित नज़र डालना) करते हैं न कि गहराई से पढ़ते हैं, जिससे उनकी विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच का विकास प्रभावित होता है।" (यादव, 2022, पृ. 56)[4]

2. विषय-वस्तु और प्रस्तुति में परिवर्तन

तकनीकी विकास ने बाल साहित्य की विषय-वस्तु और प्रस्तुति को भी प्रभावित किया है। आज की कहानियों में अधिक विविधता, इंटरैक्टिविटी और मल्टीमीडिया तत्वों का समावेश होता है। ऑडियो-विजुअल प्रभाव, एनिमेशन और इंटरैक्टिव विकल्प बच्चों को आकर्षित करते हैं, लेकिन कभी-कभी ये मूल कथानक और संदेश को कमज़ोर कर देते हैं।

बाल साहित्यकार सुदर्शन वशिष्ठ ने टिप्पणी की है कि, ''आज की बाल कहानियों में चमक-दमक और तड़क-भड़क अधिक है, लेकिन गहराई

और संवेदना कम होती जा रही है। हमें इस संतुलन को पुनः स्थापित करना होगा।" (वशिष्ठ, शैक्षिक संगोष्ठी, 2023)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्मित बाल साहित्य का उदय

कृत्रिम बुद्धि की प्रगति ने बाल साहित्य के सृजन में एक नया आयाम जोड़ा है। आज, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अल्गोरिदम बच्चों के लिए कहानियां, कविताएं और शैक्षिक सामग्री तैयार कर सकते हैं। हालांकि, इनकी गुणवत्ता और प्रभावशीलता पर प्रश्न उठ रहे हैं।

शोधकर्ता नीलम शर्मा के अनुसार, ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्मित बाल साहित्य तकनीकी रूप से सही हो सकता है, लेकिन इसमें वह आत्मीयता, क्षेत्रीय संदर्भ और भावनात्मक गहराई नहीं होती जो एक अनुभवी बाल लेखक की रचना में होती है।" (शर्मा, 2023, पृ. 89)[5]

प्रमुख बाल साहित्यकारों की प्रतिक्रियाएं और अभिनव प्रयास

नारायण शर्मा का योगदान

प्रख्यात बाल साहित्यकार नारायण शर्मा ने डिजिटल युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी रचनाओं को नए प्रारूपों में प्रस्तुत किया है। उनकी ''चिड़िया की समझदारी" और ''जादुई पेंसिल" जैसी कहानियां अब इंटरैक्टिव ई-बुक्स और मोबाइल ऐप्स के रूप में उपलब्ध हैं, जिनमें पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक प्रस्तुति का संगम है।

अनु सिंह चौहान की डिजिटल पहल

अनु सिंह चौहान ने अपनी ''नन्हे-मुन्ने की दुनिया" श्रृंखला के लिए एक नवीन दृष्टिकोण अपनाया है। उन्होंने अपनी कहानियों को ऑडियो बुक्स, एनिमेटेड वीडियो और इंटरैक्टिव ऐप्स के रूप में प्रस्तुत किया है, जिनमें बच्चे कहानी के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

चौहान का मानना है कि, ''डिजिटल माध्यम हमें बच्चों के साथ संवाद का एक नया अवसर देता है। हम इसके माध्यम से उन बच्चों तक भी पहुंच सकते हैं जो पारंपरिक पुस्तकें पढ़ने से कतराते हैं।" (चौहान, 2021, पृ. 34)[6]

प्रकाश मनु का कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ प्रयोग

तकनीकी पृष्ठभूमि वाले बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ सहयोगात्मक लेखन का प्रयोग किया है। उनकी ''रोबो और राजू की कहानियां" श्रृंखला कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ सहयोग से तैयार

की गई है, जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कथानक के ढांचे और विवरणों में सहायता की, जबकि मनु ने चरित्र विकास और भावनात्मक नुआंस पर ध्यान दिया।

मनु के अनुसार, ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक उपकरण है, जिसका उपयोग हम अपनी रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। लेकिन अंतिम निर्णय और निर्देशन हमेशा मानव रचनाकार के हाथ में होना चाहिए।" (साहित्य परिषद सम्मेलन, 2023)

बाल साहित्य के समक्ष वर्तमान चुनौतियां

1. अल्प ध्यान-केंद्रण और त्वरित संतुष्टि की मांग

आज के बच्चे स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के युग में बड़े हो रहे हैं, जहां त्वरित संतुष्टि और लगातार बदलते विषय-वस्तु की प्रवृत्ति विकसित हुई है। इससे गहन पठन और धैर्यपूर्ण कथा-श्रवण की क्षमता प्रभावित हुई है।

शोधकर्ता अमित सक्सेना के अनुसार, ''आज के डिजिटल नेटिव बच्चों का ध्यान-केंद्रण समय औसतन 8—10 मिनट है, जबकि 20 वर्ष पहले यह 20—25 मिनट था। इसका अर्थ है कि बाल साहित्यकारों को अपनी प्रस्तुति और नैरेटिव में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने होंगे।" (सक्सेना, 2022, पृ. 67)[7]

2. भाषाई चुनौतियां और क्षेत्रीय भाषाओं का संकट

डिजिटल माध्यमों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित सामग्री में अंग्रेजी और हिंदी जैसी प्रमुख भाषाओं का वर्चस्व है। इससे क्षेत्रीय भाषाओं में बाल साहित्य का विकास प्रभावित हुआ है। भाषाविद् और बाल साहित्यकार डॉ. कमला भसीन के अनुसार, ''यदि हम अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में बाल साहित्य को समृद्ध नहीं रखते, तो हमारी आने वाली पीढ़ियां अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट जाएंगी।" (भसीन, 2021, पृ. 123)[8]

3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्मित सामग्री और मानवीय मूल्य

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित बाल साहित्य में मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का अभाव एक गंभीर चिंता का विषय है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अल्गोरिदम वर्तमान में उपलब्ध डेटा से सीखते हैं, जो पूर्वाग्रहों और समस्याग्रस्त दृष्टिकोणों से प्रभावित हो सकता है।

नीतिशास्त्री और शिक्षाविद् प्रो. राजेंद्र यादव ने चेतावनी दी है कि, ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्मित बाल साहित्य के अनियंत्रित विकास से हमारे

सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसके लिए एक नैतिक फ्रेमवर्क और मानवीय निगरानी आवश्यक है।" (यादव, 2023, पृ. 45)[9]

भविष्य के लिए रणनीतियां और सुझाव

1. तकनीक और परंपरा का समन्वय

बाल साहित्य के भविष्य के लिए तकनीकी नवाचार और परंपरागत मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए:

- मिश्रित माध्यम (ब्लेंडेड मीडिया) का विकास, जहां पारंपरिक पुस्तकें और डिजिटल सामग्री एक-दूसरे के पूरक हों।
- क्षेत्रीय भाषाओं और स्थानीय कहानियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव रचनाकारों के बीच सहयोगात्मक मॉडल विकसित करना।

2. डिजिटल साक्षरता और आलोचनात्मक सोच का विकास

बच्चों को डिजिटल माध्यमों के जिम्मेदार उपयोग और आलोचनात्मक मूल्यांकन के लिए तैयार करना आवश्यक है:

- स्कूल पाठ्यक्रम में डिजिटल साक्षरता को शामिल करना।
- माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों के डिजिटल उपयोग की निगरानी और मार्गदर्शन के लिए प्रशिक्षित करना।
- बच्चों को विभिन्न प्रकार के मीडिया और कंटेंट के बीच अंतर समझने में मदद करना।

3. नीतिगत हस्तक्षेप और संस्थागत समर्थन

सरकार और अन्य संस्थाओं द्वारा बाल साहित्य के संरक्षण और विकास के लिए नीतिगत पहल आवश्यक हैं:

- गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य के सृजन और प्रकाशन के लिए प्रोत्साहन और अनुदान।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्मित बाल साहित्य के लिए गुणवत्ता मानक और नैतिक दिशानिर्देश तैयार करना।
- क्षेत्रीय भाषाओं में बाल साहित्य के संरक्षण और डिजिटलीकरण के लिए विशेष कार्यक्रम।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धि और तकनीकी विकास के इस युग में बाल साहित्य के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं, लेकिन इन्हीं चुनौतियों में नए अवसर भी छिपे हैं। हमें तकनीक का विरोध नहीं, बल्कि इसका रचनात्मक और जिम्मेदार उपयोग करना होगा। परंपरागत मूल्यों और आधुनिक प्रस्तुति के बीच संतुलन स्थापित करके हम बाल साहित्य को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। जैसा कि प्रसिद्ध बाल साहित्यकार गुलज़ार ने कहा है, ''बच्चों की कहानियां हमारे भविष्य की कहानियां हैं। इन्हें संवारने की जिम्मेदारी हम सब की है - चाहे कलम से लिखें या कीबोर्ड से।" हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि डिजिटल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में भी बाल साहित्य अपनी मूल आत्मा, मानवीय संवेदना और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहे।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. कुमार, क. (2019) 'डिजिटल युग में बालमन', नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन
2. सिन्हा, मृदुला. (2020) 'बदलते परिवेश में बाल कथा', इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन।
3. कुमार, द. (2023) कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में बाल साहित्यः चुनौतियां और अवसर 'साहित्य और समाज', 15(2), 102—118
4. यादव, र. (2022) डिजिटल माध्यमों का बच्चों की पठन आदतों पर प्रभाव. 'शिक्षा विमर्श', 8(3), 45—62।
5. शर्मा, न. (2023) 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रचनात्मक लेखनः एक विश्लेषण'. जयपुरः पंचशील प्रकाशन
6. चौहान, अ. (2021) 'डिजिटल माध्यम और बाल मनोविज्ञान', मुंबईः मैजेस्टिक बुक्स
7. सक्सेना, अ. (2022) स्क्रीन एज में बच्चों की ध्यान-केंद्रण क्षमता. 'मनोविज्ञान अध्ययन', 12(4), 56—72
8. भसीन, क. (2021) 'भारतीय भाषाओं में बाल साहित्यः वर्तमान परिदृश्य', दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
9. यादव, र. (2023) 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नैतिक मूल्यः शिक्षा के संदर्भ में', पटनाः अंजलि प्रकाशन।